B.com-I

Auditing (H)

प्रीत कु० सुमन
R. N. C

(8) पुस्तपालन, लेखाकर्म एवं अंकेक्षण की परिभाषा दें तथा लेखाकर्म एवं अंकेक्षण में अन्तर स्पष्ट करें?

उत्तर

* पुस्तपालन (Book-Keeping) → पुस्तपालन जर्नल तथा खाताबही में व्यापारिक सौदों के विधिवत् लेखे करने की कला है। हिसाब-किताब लिखने वाला कोई भी व्यक्ति इस कार्य को सुविधा से कर सकता है। यह एक लिपिकीय कार्य है जिसके लिए दोहरा लेखा प्रणाली के सामान्य ज्ञान की आवश्यकता होती है।

इसके प्रमुख कार्य → लेखा करना व शेष निकालना (Recording & Blancing)

- जर्नल प्रविष्टियाँ करना (Journalising)
- इन प्रविष्टियों को खाताबही में ले जाना (Posting)
- खाताबही के खातों में योग करना (Totling)
- खातों का शेष निकालना (Balancing)

* लेखाकर्म (Accountancy) → लेखापाल का कार्य पुस्तपालक के कार्य के बाद प्रारंभ होता है, यही कारण कहा जाता है कि जहाँ से पुस्तपालन समाप्त होता है वहीं से लेखाकर्म प्रारंभ होता है। लेखापाल एक सुशिक्षित व्यक्ति होता है जो पुस्तपालन के कार्य को भली प्रकार से समझता हो, लेखापाल का कार्य जटिल कार्य है अतः इस कार्य को करने वाला व्यक्ति लेखापाल कहा जाता है।

कार्य — सारांश तथा विश्लेषण (Summary & Analysis)

- पुस्तपालक के कार्य की जाँच करना
- तलपट (Trial blance) बनाना
- चिट्ठा (Balance sheet) तैयार करना
- भूल सुधार (Rectification of errors) तथा समायोजन के लेखे करना (Adjusting entries)
- माल खाता तथा लाभ-हानि खाता बनाना। (Trading & Profit & Loss A/c)

* अंकेक्षण (Auditing) :- जहाँ लेखा-कार्य समाप्त होता है, वहाँ अंकेक्षण प्रारंभ होता है। एक अंकेक्षक लेखापाल के कार्य की जाँच करता है, जो कि प्राप्त प्रमाणकों, प्रपत्रों, सूचनाओं तथा स्पष्टीकरणों के आधार पर की जाती है।

कार्य :- जाँच
- लेखापाल के कार्य की जाँच
- लाभ-हानि खाते का सत्यापन करना
- आर्थिक चिट्ठे का सत्यापन करना
- अंकेक्षण रिपोर्ट प्रेषित करना

इसलिए कहा गया है कि —
"लेखाकर्म प्रारंभ होता है जहाँ पुस्तपालन समाप्त होता है और अंकेक्षण प्रारंभ होता है जहाँ लेखाकर्म समाप्त होता है।"

("Accountancy begins where Book-keeping ends and Auditing begins where Accountancy ends.")

* Difference between Accountancy and Audit

पुस्तपालन, लेखाकर्म व अंकेक्षण में पारस्परिक संबंध है। अंकेक्षण, पुस्तपालन एवं लेखाकर्म की जाँच कर अशुद्धियों का पता लगाता है और उन्हें सही कर लेखाकर्म के कार्यों को सत्यापित करता है। परन्तु इसमें पारस्परिक संबंध होते हुए भी लेखाकर्म एवं अंकेक्षण में अन्तर है —

Scanned with CamScanner

आधार (Base)	लेखाकर्म	अंकेक्षण
1. क्षेत्र	लेखाकर्म के अन्तर्गत सारांश तथा विश्लेषण करना होता है अर्थात् इसमें तलपट, चिट्ठा, लाभ-हानि खाता बनाना प्रमुख है,	अंकेक्षण के अन्तर्गत लेखापाल के द्वारा बनाये गये अन्तिम खातों की जाँच होती है,
2. योग्यता	लेखाकर्म करने वाले के लिए अंकेक्षक की योग्यता आवश्यक नहीं है।	अंकेक्षण का कार्य करने वाले के लिए लेखाकर्म का ज्ञान अति आवश्यक है।
3. कार्य की सम्पन्नता	लेखाकर्म करने के लिए संस्था में ही लेखापाल नियुक्त किया जाता है। वह सवैतनिक कर्मचारी होता है,	अंकेक्षण सर्वैव बाहरी व्यक्ति किया जाता है,
4. प्रारम्भ	पुस्तपालन की समाप्ति पर लेखाकर्म आरंभ होता है,	लेखाकर्म जहाँ समाप्त होता है वहाँ अंकेक्षण आरंभ होता है,
5. रिपोर्ट	लेखाकर्म करने के पश्चात् लेखापाल को रिपोर्ट नहीं देनी होती है।	अंकेक्षण के पूरा होने पर रिपोर्ट देना आवश्यक है।
6. नियम	कुछ निश्चित व परम्परागत नियमों व सिद्धांतों के सहारे लेखाकर्म का कार्य किया जाता है,	अंकेक्षण के कार्य में परिस्थितियों के अनुरूप परिवर्तित किये जाते हैं।
7. उद्देश्य	लेखाकर्म व्यवसाय की लाभ-हानि व आर्थिक स्थिति की सूचना प्राप्त करने के लिए किया जाता है।	अंकेक्षण वित्तीय विवरणों द्वारा दर्शाए गए लाभ-हानि व आर्थिक स्थिति की सत्यता व शुद्धता की जाँच करता है,
8. वैधानिक नियम	लेखाकर्म में विभिन्न लेखांकन के नियमों व सिद्धांतों का पालन किया जाता है	अंकेक्षण में कोई निर्धारित नियम नहीं है।
9. पारिश्रमिक	लेखाकर्म के कार्य को सम्पन्न करने वाले को वेतन के रूप में पारिश्रमिक दिया जाता है।	अंकेक्षण के कार्य को करने वाले को फीस के रूप में भुगतान किया जाता है।
10. उत्तरदायित्व	लेखापाल अपने द्वारा किए गए लेखांकन के उत्तरदायी होते हैं।	अंकेक्षक लेखाकर्म के कार्य के लिए उत्तरदायी नहीं है।
11. प्रेरक	लेखापाल का कार्य अंकेक्षण करना नहीं है	एक अंकेक्षक प्रलेखों के अलावे पुस्तकें लिखने का कार्य कर सकता है।

Scanned with CamScanner